Introduction

वक्तव्य

=**********=

आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता का संदर्भ विशेष महत्व का है. राष्ट्रीय जागरण के आधार के कारण आधुनिक काल की वीर रसात्मक कविताएँ इस युग के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चिन्तन से अनुप्राणित है. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का यह काव्यात्मक इतिहास अब तक गंभीरता से मूल्यांकित नहीं हो सका. इस साहित्य का तत्कालीन संदर्भों में उचित मूल्यांकन की आवश्यकता से प्रेरित होकर तथा अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं की साहित्यिक मूल्यांकन में होती जा रही उपेक्षा को लक्ष्य करके इस दीर्घ काल-व्यापी परम्परा का अनुसंधान करने का निश्चय किया गया है ।

हिन्दी के आधुनिक कालीन वीर काव्य की आधार भूत सामग्री को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है---

॥क॥ वीर रस सम्बन्धी चिन्तन जो पूर्ववर्ती परम्परा से प्रवहमान रहा है जैसे ऋग्वेद, मार्कण्डेय पुराण, महाभारत, दशरूपक, रसगंगाधर, नाट्यशास्त्र, साहित्य दर्पण इत्यादि .

॥ख॥ हिन्दी के आधुनिक कालीन वीर काव्य जो काव्य रूप के दृष्टिकोण से चार प्रकार के हैं-- महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक तथा निबद्ध रचनाएँ. उदाहरण स्वरूप " हल्दीघाटी ", " आर्यावर्त ", " तात्याटोपे ", " कृष्णायन ", " जयभारत ", " रश्मिरथी ", " कर्ण ", " जयहनुमान " , " गोरा बध ", " सूली और शान्ति " , " हिमकिरीटिनी, " कुंकुम ", " परशुराम की प्रतीक्षा ", " शेर सिंह का शस्त्र समर्पण ", " सरदार चूड़ावत ", " महान प्रतिशोध ", " बेतवा का सत्याग्रह " आदि को लिया जा सकता है ।

॥ग॥ हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, आधुनिक हिन्दी

साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, पार्षद अभिनन्दन ग्रंथ, एक कवि एक देश, जायसी ग्रंथावली, विदेशों के महाकाव्य, हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य, हिन्दी महाकाव्यों में मनोवैज्ञानिक तत्व आदि ग्रंथों में हिन्दी के वीर काव्यों का प्रसंगानुसार सीमित मात्रा में चिन्तन हुआ है. इनके अतिरिक्त वीर रस के संदर्भ में हिन्दी काव्य का अनुशीलन अब निम्नलिखित विषय पर किया गया है--

1. वीर काव्य : डॉ० टीकम सिंह तोमर (वीर गाथा कालीन कवि).
2. हिन्दी के वीर काव्य : उदयनारायण तिवारी (रीतिकालीन कवियों तक)
3. वीर रस का शास्त्रीय अनुशीलन- डा० बटे कृष्ण.
4. दिनकर का वीर काव्य : धर्मपाल सिंह आर्य.
5. श्यामनारायण पाण्डेय : व्यक्ति एवं कृतित्व : डा० के० जी० कदम (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)

उपर्युक्त ग्रंथों में से प्रथम तीन में से प्रथम दो मध्यकाल तक के वीर काव्यों के अनुशीलन से सम्बन्धित है तथा अन्तिम दो में कवि विशेष के वीर काव्यों को अध्ययन का आधार बनाया गया है. इस प्रकार आधुनिक युग के वीर काव्यों की व्यापक काव्य-चेतना पर अब तक कोई अध्ययन लेखिका को नहीं ज्ञात हो सका है. दूसरी ओर यह उल्लेखनीय है कि आधुनिक युग में रचित हिन्दी वीर काव्य आधुनिक काव्य परम्परा की राष्ट्रीय धारा की एक महत्वपूर्ण कड़ी है. इस कड़ी को सूत्रबद्ध करने तथा आधुनिक वीर काव्यों की वस्तुस्थिति तथा प्रासंगिकता के मूल्यांकन का संकल्प प्रस्तुत अनुशीलन का एक आधार है. यद्यपि दिनकर जी एवं श्यामनारायण पाण्डेय जी जैसे वीर कवियों पर कार्य

हो चुके हैं, परन्तु ये कार्य वीर-काव्य की परम्परा को समुचित न्याय नहीं दे सके. विषय के चयन की दृष्टि से ही नहीं, विषय के प्रतिपादन की दृष्टि से भी मौलिकता का निरंतर ध्यान रखा गया है. लेखिका ने छायावादी युग के वीर काव्यों से लेकर प्रयोगवादी काव्य धारा के समय तक के वीर काव्यों का विश्लेषण और मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया है. इस अनुशीलन को कालगत सीमा में आबद्ध करके प्रस्तुत किया गया है किन्तु लेखिका ने सावधानी बरतने का यथासंभव प्रयास किया है कि विषयत आधुनिक चेतना का इसमें आंकलन हो सके. हमारी अनु-सन्धेय सामग्री सन् 1920 से लेकर 1965 ई० के बीच में रचित वीर काव्यों की है ।

उपर्युक्त काल खण्ड निर्धारण का स्पष्टीकरण यहाँ आवश्यक है. आधुनिक काल का प्रारंभ प्रायः भारतेन्दु युग से माना जाता है. इसमें जो वीर काव्य लिखे गये हैं वे सांस्कृतिक पुनर्जागरण से प्रभावित कहे जा सकते हैं. सन् 1920 ई० के पश्चात् राजनीतिक आंदोलन, क्रान्तिकारियों के प्रयत्न हुए जिसके फलस्वरूप कई काव्य कृतियाँ प्रकाश में आयीं. स्वतंत्रता के उपरान्त भी वीर काव्य की यह धारा क्षीण नहीं हुई. चीन एवं पाकिस्तान जैसे पड़ोसी राज्यों के आक्रमणों ने इन्हें प्रेरणा दी. इस राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना भी सतत् क्रियाशील रही और इसने भी वीर काव्यों की रचना में पर्याप्त सहायता प्रदान की. समय और विस्तार को ध्यान में रखते हुए ही हमने सन् 1920 से लेकर सन् 1965 ई० के बीच में रचित वीर काव्यों को लेने का प्रयास किया है.

सन् 1920 से लेकर सन् 1965 ई० के बीच रचित वीर काव्यों की कोटि में आने वाले महाकाव्य,खण्डकाव्य, निबद्ध एवं लम्बी कविताओं एवं मुक्तक रचनाओं की पर्याप्त संख्या है. छायावाद, प्रगतिवाद,

प्रयोगवाद और स्वातंत्र्योत्तर युगों की काव्य चेतना इन कला अथवा प्रयोजन आंदोलनों के कारण अवश्य मोड़ लेती रही है किन्तु वीर काव्यों की अखण्ड परंपरा में कहीं भी व्यवधान नहीं दिखाई पड़ता. सन 1920 से लेकर 15 अगस्त 1947 तक का कालखण्ड युगीन परिवेश के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आंदोलनों और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किये गये क्रांतिकारियों के अभियानों का काल है. इस काल खण्ड में हिन्दी काव्य के क्षेत्र में चाहे कितने ही काव्यान्दोलन चलाये गये हों किन्तु कवि युग गत चेतना से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता. उक्त राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की चेतना भी सतत गतिशील रही है. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हुए दो- दो विदेशी आक्रमणों की गंभीर परिस्थितियों में भी उपर्युक्त राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को नये संदर्भों में उद्दीप्त करने का प्रयास किया गया है जिसके परिणामस्वरूप एक आध प्रबन्ध काव्य के अतिरिक्त अनेक मुक्तक रचनायें प्रकाश में आयीं ।

भारतीय जनमानस पर पौराणिक काव्यों का प्रभाव तथा उनके प्रति आकर्षण अधिक समय तक विद्यमान रहा है. आज की आधुनिक और उसके बोध की स्थिति में यह आकर्षण किसी न किसी रूप में विद्यमान है. यह कहा जा सकता है कि भारतीय मनीषा की परंपरा-प्रियता इसके लिए उत्तरदायी कही जा सकती है. अनेक कवियों द्वारा रचित वीर काव्यों में पौराणिक आख्यानों को काव्य का विषय बनाये जाने के प्रति यही मनोभावना काम करती हुई जान पड़ती है.

विवेचनगत सुविधा के विचार से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को दस अध्यायों में विभाजित किया गया है जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है--

प्रथम अध्याय वीर रस के शास्त्रीय अनुशीलन और उसके सामाजक संदर्भ के विवेचन सम्बन्धित है. इसमें वीर रस के शास्त्रीय स्वरूप के स्पष्टीकरण में वीरों की कोटियाँ, वीर रस के अवयवों तथा इसकी सामाजिक भूमिका के संदर्भ में अनुशीलन किया गया है । इसके लिए सामग्री ऋग्वेद, रसगंगाधर, नाट्यशास्त्र, छन्द प्रभाकर, रस सिद्धान्त, काव्य दर्पण एवं बटे कृष्ण के वीर रस के शास्त्रीय अनुशीलन से ली गयी है जिनमें निष्कर्ष अपने दिए गये हैं.

द्वितीय अध्याय में आधुनिक युग में लिखे गये वीर काव्यों के प्रेरणा स्त्रोतों का अध्ययन किया गया है. इस संदर्भ में काव्य और परिवेश के पारस्परिक संबंधों के साथ वीर कवियों की प्रेरणाओं, आधुनिक युग के नवजागरण की अन्तर्वृत्तियों, राष्ट्रीय आंदोलनों, आर्थिक परिस्थितियों तथा विदेशी आक्रमण से उद्भूत राजनीतिक चेतना का अध्ययन किया गया है. वीर काव्य की यह पृष्ठभूमि है जो कवियों की रचनात्मकता के लिए प्रेरणा बिन्दु बनी रही है. अन्त में यह निष्कर्ष स्वरूप कहा गया है कि आधुनिक युग के नवजागरण का सीधा प्रभाव वीर काव्यों की रचना पर नहीं पड़ता, किन्तु यह सांस्कृतिक चेतना एक प्रकार से परवर्ती युग के राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि के रूप में प्रतिष्ठित है. सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रीय आंदोलन एवं क्रान्तिकारियों के बलिदान ही आधुनिक वीर काव्यों की प्रेरणा भूमि का निर्माण करते हैं. सांस्कृतिक पुनर्जागरण ने वीर वृत्ति को भारत की सांस्कृतिक परम्परा तथा इतिहास के गौरवमय पृष्ठों से प्रेरणा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है. इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि ये प्रेरणा भूमियाँ प्रधानतया स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व रचित रचनाओं की प्रेरक रही हैं, यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की रचनाएँ भी राष्ट्रीय आंदोलनों, क्रांतिकारियों के प्रयत्नों तथा पुनर्जागरण से कहीं अंशतः तो प्रभावित रही हैं. इनके अतिरिक्त

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हुए विदेशी आक्रमणों ने हमारी मनीषा एवं जनमानस को उद्वेलित किया जिसके प्रकारान्तर से कवियों ने अनेक ऐतिहासिक महत्व के वीर काव्य लिखे. इस अध्याय के लिए महत्वपूर्ण तिथियाँ एवं सामग्री के लिए सहायता एशियन रिकार्डस, कांग्रेस का इतिहास, सत्यार्थ प्रकाश, भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, आधुनिक सामाजिक आंदोलन और हिन्दी साहित्य, डिसकवरी ऑफ इंडिया, आदि से लिए गये हैं.

तृतीय अध्याय में आधुनिक वीर काव्य की परंपरा का सर्वेक्षण किया गया है. इसमें वीर काव्य की परंपरा के साथ युगों के आधार पर तीन उपखण्डों में विभाजित किया गया है. छायावादी युग, प्रगतिवादी युग और प्रयोगवादी युग. वीर काव्यों की पृष्ठभूमि के लिए भारतेन्दु और द्विवेदी युग का भी अध्ययन किया गया है । अन्त में निष्कर्षतः छायावादी काव्य में चित्रित वीर भावना का प्रबल रूप उन कवियों में मिलता है जहाँ आत्म बलिदान के प्रति उत्साह व्यक्त किया गया है. इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के रागात्मक पक्ष का चित्रण यथासंभव हुआ है. प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद के युगों में लिखित वीर काव्यों की पृष्ठभूमि में अतीत के प्रति गौरव भावना जो कि राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का परिणाम कही जा सकती है. यदि इन तीनों कालों की तुलना की जाये तो यह महत्वपूर्ण तथ्य सामने आता है कि प्रयोगवाद में रचित वीर काव्यों की संख्या सबसे अधिक हैं. उपर्युक्त उपखण्डों में हुए वीर काव्यों की कोटि में लगभग 13 महाकाव्य, 16 खण्डकाव्य, एवं अनेक मुक्तक रचनायें प्राप्त होती हैं जो इसे एक महत्वपूर्ण काव्य धारा के रूप में प्रतिष्ठित करती है.

चतुर्थ अध्याय में प्रमुख कवियों और उनकी कृतियों का परिशीलन

किया गया है. उन कवियों को प्रमुख रूप से चार धाराओं में विभक्त किया गया है. पहली धारा में उन कवियों को रखा गया है जो छायावादी युग से लेकर प्रयोगवादी युग तक निरन्तर लिखते रहे हैं. इन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, (शक्ति, विकट भट, स्वदेश संगीत, सिद्धराज, मंगल घट, जयभारत), सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (अनामिका, अपरा), माखनलाल चतुर्वेदी (हिमकिरीटिनी, माता, युगचरण), बालकृष्ण शर्मा नवीन (कुंकुम, प्राणार्पण), सोहनलाल द्विवेदी (भैरवी, वासवदत्ता, पूजागीत, प्रभाती, चेतना), श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद " (झण्डा ऊँचा रहे हमारा), रामधारी सिंह " दिनकर (प्रण भंग, रेणुका, हुंकार, सामधेनी, रश्मिरथी, इतिहास के आँसू, परशुराम की प्रतीक्षा) है. दूसरी धारा में उन कवियों की गणना की गयी है जो केवल छायावादी युग के हैं. इन कवियों में जयशंकर प्रसाद (लहर), सुभद्राकुमारी चौहान (मुकुल), वियोगी हरि (वीर सतसई), गुरुभक्त सिंह भक्त (विक्रमादित्य), तीसरी धारा में प्रगतिवादी युग के कवियों को स्थान दिया गया है. इनमें शिवमंगलसिंह सुमन (विश्वास बढ़ता ही गया), श्याम नारायण पाण्डेय (हल्दीघाटी, जौहर, जय हनुमान, तुमुल, गोरा बध (मलखान सिंह " सिसौदिया (सूली और शान्ति , बंगाल के प्रति एवं अन्य कवितायें), कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह (शम्पा, प्रतिपदा), द्वारिका प्रसाद मिश्र (कृष्णायन) जैसे कवि आते हैं. चौथी धारा प्रयोगवादी युग के कवियों की है. इसमें श्री कृष्ण सरल (भगतसिंह), आनन्दकुमार (अंगराज), विश्वनाथ पाठक (रणचण्डी), जीवन शुक्ल (सिंहद्वार). श्यामनारायण प्रसाद (झाँसी की रानी), हरदयालु सिंह (रावण), लक्ष्मी नारायण मिश्र (सेनापति कर्ण), लक्ष्मीनारायण कुशवाहा (तात्याटोपे), मोहनलाल महतो वियोगी " आर्यावर्त), लालधर त्रिपाठी (छत्रसाल),

केदार नाथ मिश्र " प्रभात " (कर्ण), जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द (बलिपथ के गीत) जैसे कवि आते हैं ।

इस प्रकार सन 1920 से लेकर 1965 तक रचित वीर काव्यों की एक सशक्त परम्परा प्रकाश में आती है जिसमें सभी प्रकार के काव्य रूपों के साथ-साथ विषय वैविध्य भी है. इनमें युगीन चेतना अपनी समग्रता के साथ अंकित हुई है. इसमें लेखिका ने अध्ययन-सामग्री को आधार बनाकर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया है, जो उसका पूर्णतया मौलिक प्रयास है ।

पंचम अध्याय में वीर काव्य धारा के अंतर्गत आने वाले आधुनिक युग के महाकाव्यों का अध्ययन किया गया है. इसी संदर्भ में महाकाव्य के स्वरूप पर संक्षेप में विचार करते हुए इस युग के महाकाव्यों का विभाजन भी किया गया है. स्त्रोत के आधार पर ये महाकाव्य दो प्रकार के हैं --

पहला वर्ग ऐतिहासिक महाकाव्यों का है जिसमें तीन उपसर्ग हैं.

(क) प्राचीन ऐतिहासिक कथानक पर आधारित -विक्रमादित्य और अशोक जैसे महाकाव्यों को प्रथम में स्थान दिया गया है ।

(ख) दूसरे में मध्यकालीन ऐतिहासिक कथानक पर आधारित- हल्दीघाटी, आर्यावर्त, जौहर और छत्रसाल जैसे महाकाव्यों का अध्ययन किया गया है ।

(ग) तीसरे में सम सामायिक राष्ट्रीय चेतना पर झाँसी की रानी, तात्याटोपे और भगतसिंह जैसे महाकाव्यों का परिशीलन किया गया है ।

महाकाव्यों का दूसरा वर्ग पौराणिक कथानक पर आधारित महाकाव्यों का है इसमें अंगराज एवं रावण जैसे महाकाव्य का विवेचन किया गया है ।

इनके अतिरिक्त रूपाकार के दृष्टिकोण से इन महाकाव्यों का एक तीसरा वर्ग बृहद्- प्रबन्धों का है, जिसमें जयभारत एवं कृष्णायन जैसे प्रबंधों को रखा जा सकता है. अन्त में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस आलोच्य काल में आने वाले ऐतिहासिक, पौराणिक एवं वृहद प्रबंध किसी न किसी रूप में सम सामायिक चेतना से जुड़े हुए हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि क्रांतिकारियों के प्रयत्नों, कांग्रेस के प्रयासों ने अप्रत्यक्ष रूप से युगीन चेतना पर अपना प्रभाव डाल रहे थे. दूसरी ओर पौराणिक महाकाव्य एवं वृहद प्रबंध जैसी रचनायें यद्यपि राष्ट्रीय चेतना से जुड़ी हुई प्रतीत नहीं होती, तथापि वे एक सीमा तक सांस्कृतिक पुनर्जागरण की चेतना से जुड़ी हुई कही जा सकती है. इसके अतिरिक्त पौराणिक महाकाव्यों के द्वारा आधुनिक काल में नवयुग की चेतना के प्रसार और मानवतावादी चिन्तनधारा के परिणाम स्वरूप उपेक्षित पात्रों को भी नायक पद पर प्रतिष्ठित किया गया है. रावण एवं अंगराज इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं. इनमें कवि की नवीनता के प्रति सजगता परिलक्षित होती है. यह अनुशीलन इस तथ्य को प्रकाशित करता है कि आधुनिक काव्यधारा में महाकाव्यों की कोटि में लगभग तेरह रचनाओं का अस्तित्व हिन्दी वीर काव्य परम्परा को एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण काव्यधारा के रूप में स्थापित करता है.

षष्ठ अध्याय में वीर काव्यधारा के अंतर्गत आने वाले आलोच्य युग के खण्डकाव्यों का अध्ययन किया गया है. इस युग के खण्डकाव्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :--

पहला भाग ऐतिहासिक खण्डकाव्यों का है जिसके दो उपवर्ग हैं.

पहले में मध्यकालीन ऐतिहासिक कथानक पर आधारित
सिद्धराज, विकट भट, सिंहद्वार एवं गोरावध आते हैं.
दूसरा सम सामायिक राष्ट्रीय चेतना से ग्रहीत कथानक पर
आधारित - प्राणार्पण, स्वतंत्रता की बलिवेदी एवं सूली
और शान्ति है ।

दूसरा भाग पौराणिक खण्डकाव्यों का है जो तीन उपवर्गों में विभाजित है ।

पहला महाभारत से ग्रहीत कथानक पर आधारित - कर्ण,
सेनापति कर्ण, रश्मिरथी, युद्ध एवं प्रणभंग जैसी रचनायें
आती हैं.
दूसरे में रामायण से ग्रहीत कथानकों पर आधारित - तुमुल
एवं जयहनुमान जैसी पाण्डेयजी की रचनायें हैं.
तीसरे में शक्ति एवं दुर्गा पर आधारित रणचण्डी एवं शक्ति
को रखा गया है ।

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि इस आलोच्य काल में आने वाले ऐतिहासिक खण्डकाव्यों के रचयिता अस्तित्व के लिए संघर्षरत राजपूत वीरों की अत्यधिक शक्ति के माध्यम से समसामायिक राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत संघर्षों को नयी चेतना देना चाहते हैं एवं अन्य दो " प्राणार्पण " एवं " स्वतंत्रता की बलिवेदी " में आतंकवादियों एवं सत्याग्रहियों की जलियांवाला बाग से लेकर सन 1942 तक घटनायें हैं. तीसरा " सूली और शान्ति " पड़ोसी राज्य पाकिस्तान के युद्ध में संघर्षरत भारतीय वीरों का वर्णन है इसके विपरीत पौराणिक खण्डकाव्य समसामायिक राष्ट्रीय चेतना से उतने नहीं जुड़ पाये हैं जितने ऐतिहासिक खण्डकाव्य. अनेक की प्रेरणा विशुद्ध कवि की निजी धार्मिक चेतना ही

रही है. केवल यही कहा जा सकता है कि नव जागरण ने राष्ट्रीय आन्दोलनों के दिनों में भी भारतीय मनीषा को उज्जवल अतीत के गौरवगान की ओर आकर्षित किया और ये काव्य उक्त अतीत के प्रति आकर्षण का साक्ष्य उपस्थित करते हैं. यह अनुशीलन इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि आधुनिक काव्य धारा में खण्डकाव्यों की कोटि में सोलह खण्डकाव्यों का अस्तित्व हिन्दी की वीर परम्परा को एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण काव्यधारा के रूप में स्थापित करता है ।

सप्तम अध्याय में मुक्तक संग्रहों का अध्ययन किया गया है, जिसे तीन वर्गों में विभाजित किया गया है..

प्रथम सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं नवजागरण की चेतना से ग्रहीत मुक्तक संग्रह - अनामिका, रेणुका, इतिहास के आँसू, शम्पा आदि आते हैं ।

दूसरे में क्रांति, बलिदान, राष्ट्र एवं देश प्रेम की चेतना से ग्रहीत मुक्तक संग्रह- मुकुल, हुंकार, भैरवी, कुंकुम, सामधेनी, प्रभाती, विश्वास बढ़ता ही गया, झण्डा ऊँचा रहे हमारा आदि संग्रह हैं.

तीसरा इतर रचनाओं का है जिसमें वीर सतसई का अनुशीलन हुआ है. मुक्तक संग्रहों में संग्रहीत वीर रस की मुक्तक रचनाये लगभग 140 हैं जो अनेक चेतनाओं, रंगों, कर्तव्य एवं उत्साह से परिपूर्ण हैं. और ये चेतना राष्ट्रीयता से पूर्ण रूप से जुड़ी हुई है. इन मुक्तकों में प्रताप, कृष्ण, अर्जुन, झांसी की रानी आदि ऐतिहासिक महापुरुषों के माध्यमसे आज की स्वातंत्र्य चेतना को प्रेरित किया गया है तो गांधी, तिलक, नेहरु आदि समसामायिक राष्ट्रीय नेता जो स्वतंत्रता में भाग लेते रहे हैं, को लेकर रचे गये हैं. इनके कुछ रचयिता सुभद्राकुमारी चौहान, नवीन,

माखनलाल चतुर्वेदी, मलखान सिंह सिसौदिया जैसे कवि स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष भाग लेकर उसकी अनुभूति से एवं उससे प्रेरणा ग्रहण कर लिखते रहे एवं अन्य कवि घटनाओं, परिस्थितियों से प्रेरणा प्राप्त कर लिखते रहे हैं. अधिकांश कवि जो स्वतंत्रता के पहले से लिखते रहे हैं उनकी चेतना में अतीत के प्रति अधिक मोह दृष्टिगोचर होता है. इस अध्ययन द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया है कि इस काल खण्ड में आने वाले ये मुक्तक वीर काव्य धारा को एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण धारा के रूप में ही प्रतिष्ठित करते हैं.

अष्टम अध्याय में इस वीर काव्य की धारा में आने वाले निबद्ध काव्य रूपों पर विचार किया गया है जो दो उपखण्डों में विभाजित किया जा सकता है.

प्रथम में आख्यानक रचनायें पेशोला की प्रतिध्वनि, प्रलय की छाया, महान प्रतिशोध, सरदार चूड़ावत, कर्ण एवं कुन्ती आती हैं.

द्वितीय विचार प्रधान में शेर सिंह का शस्त्र समर्पण, शिवाजी का पत्र, जागो फिर एक बार, परशुराम की प्रतीक्षा, आती है.

ये निबद्ध काव्य भी अतीत के प्रति गौरव गान की चेतना से ही प्रेरणा ग्रहण कर लिखे गये हैं. इनके कवियों ने भीम, चूड़ावत, गुजरात के राजा कर्णसिंह एवं रानी कमलावती, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह एवं परशुराम जैसे प्राचीन वीरों को ही स्मरण किया है. ये निबद्ध उक्त अतीत के प्रति आकर्षण का ही साक्ष्य उपस्थित करते हैं. इस काल खण्ड में आने वाली उपरनिर्दिष्ट रचनायें वीर रस की सशक्त धारा प्रतिष्ठित करती है.

नवम् अध्याय में इस वीर काव्य धारा में आने वाले महाकाव्यों, खण्डकाव्यों, मुक्तकों एवं आख्यानों के कला सौष्टव पर विचार किया गया है. जिसमें भाषा शैली, अलंकार, छंद योजना, बिम्ब विधान, प्रतीक पर विचार किया गया है. अंत में इस खण्डके कवियों की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए उसकी उपलब्धियों का निरुपण किया गया है और प्रतीक, बिम्ब, उपमान तथा छन्द इन कविताओं में कहाँ तक सहायक रहे हैं का भी निरुपण हुआ है ।

दसवां अध्याय उपसंहार का है. जिसमें वीर काव्य धारा की प्रबन्धगत उपलब्धियों और सीमाओं का रेखांकन किया गया है. इसके साथ ही सामाजिक संदर्भ में इन काव्यों की भूमिका का महत्वांकन करने का भी प्रयास किया गया है. भावी अध्ययन की दिशाओं पर भी यत्किंचित विचार किया गया है ।

अन्त में सर्वप्रथम प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लिए बड़ी तत्परता एवं स्नेह के साथ मार्गदर्शन करने के लिए आदरणीय डॉ० मदनगोपाल जी गुप्त की मैं चिर कृतज्ञ हूँ. डॉ० गुप्तजी ने न केवल शोध प्रबन्ध के लेखन में महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिये हैं अपितु सामग्री को व्यवस्थित करने, उसका विश्लेषण करने और मूल्यांकन करने में भी महत्वपूर्ण सहायता की हैं. आधार भूत सामग्री के उपलब्ध कराने में भी उनका महत्वपूर्ण सहयोग रहा है. यह उनके निर्देशन का ही प्रतिफलन है कि यह शोध प्रबन्ध इस रूप में प्रस्तुत हो सका है ।

शोध प्रबन्ध के मध्य अनेक प्रकार के प्रश्न विषय से सम्बन्धित मस्तिष्क में उठे जिनकी जिज्ञासा की शान्ति के लिए अनेक विद्वानों, कवियों को पत्र व्यवहार भी करना पड़ा. इनमें डॉ० मलखान सिंह " सिसौदिया ", डा० के० जी० कदम, डा० राम शंकर सिंह, डा० सतिन्दर सिंह नरोवर, डॉ० जीवन शुक्ल, शहीद भगतसिंह के अनुज कुलतार

सिंह, श्याम नारायण पाण्डेय, श्री कृष्ण सरल, सोहनलाल द्विवेदी, डॉ० बिजेन्द्र अवस्थी, एवं अग्रज डॉ० जय प्रकाश आदि प्रमुख हैं. इन सुधी विद्वानों एवं कवियों ने पत्रों द्वारा, एवं कुछ ने प्रत्यक्ष भेंट में अपने विचारों द्वारा समय- समय पर मुझे अवगत कराया. मैं इन सभी विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ. सावधान रहने पर भी लेखन में त्रुटियाँ संभव हैं, जिनके लिए लेखिका विनम्र भाव से क्षमा प्रार्थी है । लेखिका का विश्वास है कि इस दिशा में किया गया एक सीमित प्रयास है और भविष्य में भी आधुनिक वीर काव्यों की नयी दिशायें प्रकाश में आ सकती हैं ।

जसबीर कौर

-- जसबीर कौर